ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी।
सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी।।५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में लगकर प्रकास ग्रन्थ की प्रगट वाणी कह रही हैं कि जिसकी आत्मा यहां जाग जाएगी उसे माया में दोनों ठौर (स्थान, ठिकानों) का (माया और परमधाम का) लाभ होगा।

।। प्रकरण ।। ३० ।। चौपाई ।। ७८८ ।।

बेहद बानी

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।। १ ।।

हे मेरे बेहद के सुन्दरसाथ! मैंने तुमको बेहद (अखण्ड) की वाणी बताई है, जिसे आज तक बड़े-बड़े (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ज्ञानी, ध्यानी) लोग हो गए, पर किसी ने नहीं जाना।

उपाय किए अनेको, पर काहूं न लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।। २ ।।

बहुतों ने कई उपाय किए, पर बेहद कहां है, किसी को पता नहीं चला। यह अखण्ड का ज्ञान जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना कोई नहीं पहचान सका।

न तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।
भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी।। ३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में छः शास्त्रों के बड़े-बड़े ज्ञानी आए, किन्तु वह भी पार के ज्ञान को जान नहीं सके। यहां तक कि शंकर भगवान भी नहीं जान सके तो उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा।

विष्णु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह।
आद करके अबलों, अगम कहियत है एह।। ४ ।।

भगवान विष्णु कहते हैं कि हे शिव ! सुनो, जो तुम पूछ रहे हो उसे, जब से सृष्टि बनी है, आज तक सबने अगम ही अगम पुकारा है। वहां तक कोई जा नहीं सका।

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं न सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।। ५ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, उनमें भी लोगों ने खूब खोजा। यहां तक कि चौदह लोकों के ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी खोज-खोजकर थक गए, पर बेहद का एक वचन भी नहीं पा सके।

फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और।
और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर।। ६ ।।

फिर शंकरजी ने विष्णु से पूछा कि क्या कोई दूसरा ब्रह्माण्ड और है, दूसरे ब्रह्माण्ड की हकीकत को इस ब्रह्माण्ड में कैसे पाया जाए?

ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत।
ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत।। ७ ।।

विष्णुजी उत्तर देते हैं कि हे शंकरजी ! यह तो स्पष्ट है, हर शास्त्रों में इसका वर्णन है। ब्रह्माण्ड का बनना और मिटना लिखा है।

Nijanand App

सुकजी और सनकादिक, कई और भी साध।
तिन खोज खोज के यों कह्या, ए तो अगम अगाध।। ८ ।।

शुकदेवजी, सनकादिक तथा अन्य कई साधुओं ने खोज की तथा बताया कि बेहद का ज्ञान किसी ने नहीं जाना। वह बहुत गहरा है, भारी है।

एक सब्द के कारने, लखमीजी आप।
नेक भी जाहेर न हुई, अंग दिए कई ताप।। ९ ।।

बेहद का एक शब्द सुनने के लिए ही लक्ष्मीजी ने अपने शरीर को कई प्रकार का कष्ट देकर सात कल्पान्त तपस्या की, फिर भी भगवान विष्णु उनको एक शब्द भी नहीं कह सके।

याही रस के कारने, कैयों किए बल।
कैयों कलप्या अपना, पर काहूं न प्रेमल।। १० ।।

इस बेहद के ज्ञान के लिए बहुतों ने ताकत लगाई और कइयों ने तो दुःखी हो अपने को समाप्त कर दिया, परन्तु उनको हद तक का पता नहीं चला।

सो रस बृज की सुंदरी, पायो सुगम।
सो सेहेजे घर आइया, जो कहे वेद अगम।। ११ ।।

वेदों ने जिसको अगम कहा है, उसको सरलता और सुगमता से बृज की सखियों ने घर बैठे ही पा लिया।

ए निध अपने घर की, इन यों तो बिलसी।
अनूं चोंच पात्र या बिना, नाहीं काहूं कैसी।। १२ ।।

हे साथजी! यह अपने घर की अखण्ड न्यामत है, जिसका बृज की सखियों ने (क्योंकि वह परमधाम की आत्माएं थीं) साधारण रूप से आनन्द लिया, परन्तु चींटी के मुख के बराबर भी इनके बिना कोई नहीं कह सका।

अबलों काहूं न जाहेर, श्री धाम के धनी।
खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी।। १३ ।।

आज तक किसी को भी यह ज्ञान नहीं हुआ कि उन सखियों (आत्माओं) के साथ उनकी आत्मा के धनी अपनी इच्छानुसार खेलते रहे। यह भेद किसी को जाहिर नहीं हुआ।

साथ इच्छाएं सुपन में, खेल मांहें आया।
बेहद थे पिउ आए के, बेहद साथ खेलाया।। १४ ।।

सुन्दरसाथ ने परमधाम में खेल देखने की इच्छा की थी। उसके अनुसार वह खेल देखने आए। उनके धनी ने बेहद (परमधाम) से आकर बेहद की आत्माओं को ही अपने संग खिलाया।

ए बानी इत हम बिना, और काहूं न होवे।
आधा लुगा न पाइए, जो जीव अपना खोवे।। १५ ।।

इस वाणी का ब्रह्मसृष्टि के बिना और किसी को आधा शब्द भी नहीं प्राप्त हो सकता। भले वह सारी उम्र तपस्या कर अपने आपको भी गंवा दे।

Nijanand App

साथ देखने आइया, पिउ इछा कर।
बेहद धनी साथ को, खेलावें चित धर।। १६ ।।

सुन्दरसाथ परमधाम से खेल देखने की इच्छा लेकर आए हैं। उनके धाम धनी अपने बेहद के साथ को इच्छा के अनुसार खेल खिलाते हैं।

ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर।। १७ ।।

धाम धनी अपने सुन्दरसाथ को हद पार बेहद तथा बेहद पार परमधाम ले चलेंगे। उसके बाद जागृत बुद्धि के अवतार इस ज्ञान को चौदह लोकों में जाहिर करेंगे।

बैकुंठ जाए विष्णु को, सब देसी खबर।
विष्णु को पार पोहोंचावसी, सब जन सचराचर।। १८ ।।

भगवान विष्णु को जागृत बुद्धि के अवतार बैकुण्ठ में जाकर इस ज्ञान से समझाएंगे और तब विष्णु भगवान को और संसार के सब जीवों को बेहद में पहुंचाकर अखण्ड कर देंगे (विष्णु भगवान ही सबके अन्दर बैठे हैं) जैसे ही उनको तारतम मिलेगा सब जीव जागृत हो जाएंगे। तब ब्रह्माण्ड का प्रलय होगा और सब बेहद में (योगमाया में) अखण्ड हो जाएंगे।

खोज पाई जिन ए निध, धंन धंन सो बुध।
दृढ़ करी सनेहसों, साथ को कही सुध।। १९ ।।

श्री देवचन्द्रजी ने बड़ी खोज की तब श्यामजी के मन्दिर में श्री राजजी महाराज से यह जागृत बुद्धि की न्यामत पाई, जिसको उन्होंने बड़ी दृढ़ता से ग्रहण किया, जिससे सुन्दरसाथ को घर की सुध दी, ऐसी जागृत बुद्धि धन्य-धन्य है।

नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी।
साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी।। २० ।।

नौतनपुरी में जब यह बुद्धि श्री देवचन्द्रजी के हृदय में विराजमान हो गई तो उन्होंने इस बेहद के ज्ञान की सुन्दरसाथ के बीच बड़े चित्त से चर्चा की। जो बेहद के साथी थे, उन्होंने ही पहचान की।

बेहद वाट देखावहीं, पिउ आए के पास।
तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास।। २१ ।।

सुन्दरसाथ के पास धाम के धनी श्री राजजी महाराज तारतम ज्ञान लेकर आए हैं, जिसके उजाले से (पहचान से) बेहद का रास्ता दिखाते हैं।

जाहेर हुई जो साथ में, देखो रास प्रकास।
तारतम वानी वतन की, जिन कियो तिमर सब नास।। २२ ।।

यह तारतम वाणी (जागृत बुद्धि का ज्ञान) हमारे घर की है। इस वाणी के द्वारा सुन्दरसाथ को रास और प्रकास के ग्रन्थों के भेद मालूम हुए और सारा संशय मिट गया।

हिरदे आद नारायन के, वेद जिनको स्वांस।
ग्रन्थ सबों की उतपन, वानी वेद व्यास।। २३ ।।

आदि नारायण के हृदय से सांसों द्वारा वेद का ज्ञान आया और उन सब वेद ग्रन्थों का सार व्यास जी की वाणी में जाहिर हुआ।

Nijanand App

तामे फल श्री भागवत, सुकजी मुख भाख।
पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख।। २४ ।।

उन सबके सार का भागवत में शुकदेवजी के मुख से वर्णन हुआ। शुकदेवजी ने बेहद का समाचार लाकर ब्रह्मसृष्टि की गवाही दी।

और भी नाम केते कहूं, इंड वानी अलेखे।
सब साख देवे बेहद की, जो कोई दिल दे देखे।। २५ ।।

इस ब्रह्माण्ड में और भी अनेक ग्रन्थ हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं? उनके अन्दर कोई चित्त से खोज करे तो सभी ग्रन्थ बेहद की साक्षी (गवाही) देते हैं।

ए बानी ए वाटड़ी, कबूं ना जाहेर।
धनी ब्रह्मांड के खोजिया, सब मांहें बाहेर।। २६ ।।

इस वाणी और इस रास्ते को आज तक किसी ने नहीं जाना। ब्रह्माण्ड के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने भी अन्दर बाहर सब जगह खोजा।

एक जरा किनहूं न पाइया, इत अनेक जो धाए।
नाम ब्रह्मांड के धनी कहे, दूजे कहा करूं सुनाए।। २७ ।।

दूसरे लोगों ने भी खोज की, परन्तु किसी को भी थोड़ा भी ज्ञान नहीं हुआ। जब ब्रह्माण्ड के मालिकों का यह हाल है तो दूसरों की क्या कहूं?

सो निध जाहेर इत हुई, धंन धंन संसार।
धंन धंन खंड भरथ का, धंन धंन नर नार।। २८ ।।

वह बेहद का ज्ञान (तारतम वाणी) अब यहां आकर जाहिर हो गया, इसलिए यह संसार, भरतखण्ड तथा यहां के सब नर-नारी धन्य हैं।

धंन धंन पांचों तत्व, धंन धंन त्रैगुन।
धंन धंन जुग सो कलजुग, धंन धंन पुरी नौतन।। २९ ।।

यहां के पांच तत्व, तीन गुण, कलियुग तथा नौतनपुरी भी धन्य-धन्य हैं।

अब कहूं लीला प्रथम की, सुनियो तुम साथ।
जो कबूं कानों ना सुनी, सो पकड़ देऊं हाथ।। ३० ।।

हे मेरे साथजी! अब पहली लीला जो हमने बृज में की है और जिसका ज्ञान यहां किसी को नहीं है, वह ज्ञान तुम्हें देकर अच्छी तरह पहचान करा देती हूं।

धोखा कोई न राखहूं, करूं निरसंदेह।
मुक्त होत सचराचर, आयो वतनी मेह।। ३१ ।।

हे मेरे साथजी! अब परमधाम का अखण्ड ज्ञान आ गया है, जिससे सारे ब्रह्माण्ड को मुक्ति मिलनी है। वह ज्ञान देकर तुम्हारे सब सन्देह मिटा देता हूं।

धंन गोकुल जमुना त्रट, धंन धंन बृजवासी।
अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी।। ३२ ।।

गोकुल ग्राम, यमुना का किनारा तथा बृज के रहने वाले धन्य हैं, जहां पर ग्यारह वर्ष तक धनी ने लीला की और उसे अखण्ड कर दिया।

Nijanand App

चौदे लोक सुपन के, साथ आया देखन।
मुक्त दे पीछे फिरे, सदासिव चेतन।। ३३ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड को देखने के लिए सुन्दरसाथ बृज में आए थे। बृज लीला देखकर सदाशिव चेतन में अखण्ड करके घर गए।

और ब्रह्मांड जोगमाया को, कियो खेलने रास।
खेल करे श्री राजसों, साथ सकल उलास।। ३४ ।।

इसके बाद रास खेलने के लिए योगमाया का दूसरा ब्रह्माण्ड बनाया गया, जिसमें सब सुन्दरसाथ अपने धनी के साथ मिलकर बड़ी उमंग से खेले।

नौतन खेल या रास को, कबहूं न होवे भंग।
खेले साथ सुपन में, जोगमाया के रंग।। ३५ ।।

इस योगमाया के ब्रह्माण्ड में सुन्दरसाथ ने जो नए-नए खेल खेले वह अखण्ड कर दिए। इनका लय नहीं होगा, परन्तु इस ब्रह्माण्ड में सपने की तरह ही रहे जहां घर की सुध नहीं थी।

तुम देखो साथ सुपन में, खेल खेले ज्यों।
एक विधें साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों।। ३६ ।।

हे सुन्दरसाथजी! देखो यह सपने में जो हमने खेल खेले वह ज्यों के त्यों आज भी अखण्ड हैं और हम भी घर में जागृत हुए।

एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उतपन।
धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन।। ३७ ।।

यह तीसरा ब्रह्माण्ड नया बना। अपने मन में माया की चाहना बाकी रह गई थी, उसे देखने आए हैं।

ब्रह्मांड तीनों देखे हम, खेल बिना हिसाब।
जाग वतन बातां करसी, जो देखी मिने ख्वाब।। ३८ ।।

हमने तीनों ब्रह्माण्डों को देखा और बेशुमार खेल खेले (लीला की)। अब परमधाम में जागृत होने पर इन सपने के ब्रह्माण्डों की बातें करेंगे।

ए जो ब्रह्मांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर।
साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर।। ३९ ।।

यह ब्रह्माण्ड नया उतपन (उत्पन्न) हुआ है। इसके पहले रास खेलकर हम अपने घर परमधाम गए थे और यहां पर दूसरी बार आए हैं।

ज्यों हरे ब्रह्मांएं बाछरू, गोवाला संघातें।
ततखिन सो नए किए, आप अपनी भांतें।। ४० ।।

जिस तरह से ब्रह्माजी ने ग्वाल-बाल और बछड़ों को हरण कर लिया था और उसी क्षण श्री कृष्ण ने ज्यों के त्यों नए बना दिए थे।

गोकुल मिने आप अपने, घर सब कोई आया।
खबर ना पड़ी काहूं को, ऐसी रची माया।। ४१ ।।

यह नए ग्वाल, बछड़े अपने-अपने घर गोकुल आए, परन्तु किसी को यह खबर नहीं हुई कि यह नए हैं। ऐसी माया की रचना कर दी।

Nijanand App

एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध।
ए बल माया देखियो, और ऐसी किध।। ४२ ।।

इसी दृष्टान्त से समझना कि यह नया ब्रह्माण्ड उसी तरह बना है। इस माया की कला देखना जैसे का तैसा ब्रह्माण्ड धनी के हुकम से बना दिया।

साथ चल्या सब वतन, अपने पिउ साथ।
और खेले रास में अखंड, इत उठे प्रभात।। ४३ ।।

रास लीला खेलकर हम सब धनी के साथ घर चले गए थे। रास भी अखण्ड हो गई फिर इस तीसरे ब्रह्माण्ड में सब उठे।

सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी।
रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी।। ४४ ।।

अब ऐसे लगा कि यह वही गोकुल है, वही यमुना तट है। वही बृजवासी हैं जो रास लीला खेलने के बाद यहां आए हैं।

जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए।
ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए।। ४५ ।।

सभी दुनियां वाले यह जानते हैं कि यह वही ब्रह्माण्ड है जिसमें हम सदा से खेलते रहे हैं, जबकि हकीकत यह है कि यह ब्रह्माण्ड उसी तरह से नया बना है।

दोऊ ब्रह्मांडों बीच में, सेर राख्या सार।
खबर न पड़ी काहू को, बेहद का बार।। ४६ ।।

इन दोनों बृज के ब्रह्माण्डों के बीच जो छिपा हुआ भेद हमारी अखण्ड रास का है, जिसकी बातें यह लोग नहीं जानते, अब बेहद की वाणी आने से सबको यह ज्ञान हो जाएगा।

इत फेर उठे जो प्रतिबिंब, यामें साथ पिउ।
खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रह्या जिउ।। ४७ ।।

इस नए ब्रह्माण्ड में जो प्रतिबिम्ब के स्वरूप बने, उसमें तन इस विष्णु भगवान का, शक्ति और भेष गोलोक का, ग्यारह दिन रहा। गोपियों पर भी शक्ति और भेष गोलोक का था। इसलिए यहां के नए जीवों को यह पता नहीं चला कि हम नए बने हैं या क्या हुआ है, यह संशय जीव का बना रहा।

धोखा इनों का भी न मिट्या, तो कहा करे और।
बेहद वानी के माएने, क्यो होवे दूजे ठौर।। ४८ ।।

नए बृज के नए तनों के जीवों का संशय नहीं मिटा तो दूसरों का कहना ही क्या, इसलिए बेहद वाणी के भेद बेहद के साथियों के बिना दूसरा कोई जान ही नहीं सकता।

यों साथ पिछला आइया, इत इन दरवाजे।
मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे।। ४९ ।।

इस तरह से कुमारिका सखियां जिनकी इच्छा पहले बृज में पूरी नहीं हुई थी, उन्होंने इस ब्रह्माण्ड में आकर प्रतिबिम्ब की लीला की। परमधाम के सुन्दरसाथ जिनके वास्ते खेल बनाया है, वह दुबारा बाद में आएंगे।

Nijanand App

क्या जाने हद के जीवड़े, बेहद की बातें।
रास में खेले अखंड, इत उठे प्रभातें।।५० ।।

माया के जीव अखण्ड ब्रह्माण्ड की बातों को क्या जानें। रात में इन जीवों ने अखण्ड रास की लीला की और रात के बाद प्रातः बृज में उठे।

खेले पिछले साथ में, सात दिन तांई।
अक्रूर चल्या बुलाए के, पोहोंचे मथुरा मांहीं।।५१ ।।

कुमारिका सखियों के जीवों के साथ सात दिन तक बृज में गोलोक की शक्ति ने लीला की, उसके बाद अक्रूरजी श्री कृष्ण को मथुरा ले गए।

तोलों भेख जो पिउ का, कुबलापील मार्‍या।
चांडूल मुष्टक संघार के, जाए कंस पछाड़्या।।५२ ।।

मथुरा में कुबलयापीड़ (हाथी) को मारा, चाणूर और मुष्टिक पहलवानों को मारा और उसके बाद कंस को मार दिया। यहां तक अभी गोलोक श्री कृष्ण की लीला ही चल रही है।

टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार।
छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थें अवतार।।५३ ।।

उग्रसेन को मथुरा का राजा बनाकर राज तिलक दिया। वसुदेव और देवकी को जेल से छुड़ाकर और पिउ वाला भेष (गोलोक वाला भेष) उतारकर नन्द बाबा को दिया। यहां चार दिन की लीला पूरी हुई। उसके बाद यहां जो अब विष्णु भगवान हैं, उनकी लीला शुरू होती है।

अब इहां से लीला हद की, सोतो सारे केहेसी।
पर वेहद वानी हम बिना, दूजा कौन देसी।।५४ ।।

यहां से क्षर ब्रह्माण्ड के श्री कृष्ण (विष्णु भगवान) की लीला शुरू होगी। इसका वर्णन सब कोई करेगा, परन्तु बेहद की लीला का भेद हमारे जो बेहद के साथी हैं, उनके बिना कौन देगा?

नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए।
बल करे अति निसंक, मिने पैठ्यो न जाए।।५५ ।।

नरसैयां इस बेहद के रास्ते खड़े होकर बेहद की लीला में मग्न हो गया। उसने अन्दर जाने का प्रयत्न तो किया पर जा नहीं सका।

जो बल किया नरसैऐं, कोई करे न और।
हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौर।।५६ ।।

जो बल नरसैयां ने किया, कोई और नहीं कर सकता। यह क्षर ब्रह्माण्ड का जीव था, परन्तु लीला देखकर इसने बेहद का अनुभव किया।

नरसैयां दौड़्या रस को, वानी करे रे पुकार।
रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार।।५७ ।।

नरसैयां रास का आनन्द लेने के लिए दौड़ा। जैसा उसकी वाणी से पता लगता है कि बेहद का रस अन्दर ही रह गया, जहां वह नहीं पहुंच सका। उसके आड़े चार दरवाजे आ गए। (स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण)।

Nijanand App

द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल।
सो इत खड़ा लेवहीं, रस की प्रेमल।। ५८ ।।

वह बेहद के दरवाजे पर खड़ा होकर मात्र अनुभव करता रहा। सब आवाजें सुनता रहा। वह यहां रहकर भी रास की लहरों का सुख लेता रहा।

इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना।
लीला पीछले साथ में, सुख ले समाना।। ५९ ।।

बेहद के रास्ते में खड़ा होकर नरसैयां प्रेम मे मगन (मग्न) हो गया और इस प्रतिबिम्ब लीला को देखकर सुख में लीन हो गया।

लीला सुकें बरनन करी, बृज रास बखाना।
बेहद की बानी बिना, ठौर ठौर बंधाना।। ६० ।।

शुकदेवजी ने बृज और रास की लीला का वर्णन किया, परन्तु बेहद का ज्ञान जागृत बुद्धि न होने से, बार-बार संशय में पड़े रहने से न पा सके।

ना तो ए क्यों ऐसे वरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई।
ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ्यो न जाई।। ६१ ।।

नहीं तो इस आनन्द के रस का वर्णन शुकदेवजी केवल पांच अध्याय में ही क्यों समाप्त कर देते। यह रस अर्थात् बेहद यदि उनको मिलता तो और कोई वाणी उनके मुख से न निकलती।

होवे अस्कंध द्वादस थें, इत कोट गुने।
पर क्या करे आग्या इतनी, बस नांहीं अपने।। ६२ ।।

यदि बेहद का ज्ञान मिल गया होता तो बारह स्कन्ध के बजाय करोड़ों स्कन्ध बन जाते, परन्तु क्या करें? जितनी आज्ञा थी उतना ही वर्णन कर सके। बेहद ज्ञान का वर्णन करना उनकी शक्ति से बाहर था।

ना हुई जाहेर या मुख, बेहद की बान।
धाख रही बोहोत हिरदे, कलप्या दुख आन।। ६३ ।।

शुकदेवजी के मुख से बेहद की वाणी का वर्णन न हो सकने के कारण उनको बहुत दुःख हुआ। उनके मन में तो बेहद के वर्णन करने की चाहना थी।

कंपमान होए कलप्या, रस गया याथें।
सोए दुख क्यों सेहें सके, रस जाए जाथें।। ६४ ।।

राजा परीक्षित के प्रश्न कर देने से बेहद का वर्णन न हो सका, इसलिए शुकदेवजी बहुत बिलखते हुए रोए। जिससे ऐसा अखण्ड सुख छिन जाए वह उस दुःख को कैसे सहन कर सकता है?

बेहद के सब्द कहे का, था हरख अपार।
दरवाजा ना खोलिया, रह्या रस सार।। ६५ ।।

शुकदेवजी के मन में बेहद के ज्ञान का वर्णन करने की बड़ी खुशी थी, परन्तु वह थोड़ा भी दरवाजा नहीं खोल पाए (ज्ञान का वर्णन नहीं कर पाए)। आनन्द के रस का आना रुक गया।

रास रात बरनन करी, देखो मन विचार।
नारायनजी की रात को, कोईक पावे पार।। ६६ ।।

सुन्दरसाथजी! जरा विचार करके देखो कि नारायणजी की रात्रि कितनी लम्बी होती है। शायद ही कोई उसका पार पाता हो, परन्तु रास की रात्रि जो अखण्ड है, उसका पार पाना कैसे सम्भव हो सकता है?

Nijanand App

पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही।
तामें अखंड लीला रासकी, पंच अध्याई भई।।६७।।

रास की रात्रि में जो लीला हो रही है उसका पारावार नहीं और अखण्ड है। उस अखण्ड रास की लीला को शुकदेवजी ने पांच अध्याय में कैसे समाप्त कर दिया?

देखो जाहेर याके माएने, चित ल्याए वचन।
रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृंदावन।।६८।।

सुन्दरसाथ! इन वचनों को चित्त में धारण कर विचारो और जाहिरी अर्थ में भी देखो। इससे जाहिर है कि वृन्दावन की रास की लीला अखण्ड रात की होने के कारण से भारी कही गयी है।

ए पंच अध्याई होवे क्यों कर, मेरे मुनीजी की बान।
पर सार समें बीच अटक्या, रस आए सुजान।।६९।।

इतनी बड़ी अखण्ड रास की लीला का वर्णन केवल पांच अध्याय में शुकदेवजी मुनि की वाणी से हो नहीं सकता था, परन्तु जैसे ही पार के ज्ञान का वर्णन शुरू हुआ, राजा परीक्षित के प्रश्न से पार का रस आना बन्द हो गया। बीच में ही अटका रहा।

दुख हुआ बोहोत कलप्या, पर कहा करे जान।
पात्र बिना पावे नहीं, रस बेहद बान।।७०।।

शुकदेवजी मुनि को बहुत दुःख हुआ और रोए। पर क्या करें? बेहद का रस पात्र के बिना टिकता नहीं।

पात्र बिना तुम पाइया, मुनीजी क्यों करो दुख।
आज लगे बेहद का, किन लिया है सुख।।७१।।

स्वामीजी कहते हैं, हे मुनिजी! तुमने पात्र न होते हुए भी इतना सुख प्राप्त कर लिया। अब दुःख क्यों करते हो? आज तक बेहद का सुख किसी ने नहीं लिया।

एतो हमारा कागद, तुम साथे आया।
खबर हद बेहद की, देकर पठाया।।७२।।

यह तो हमारी चिट्ठी है, जो तुम्हारे द्वारा आई है। इसमें क्षर और अक्षर की खबर देकर हमारे धनी ने भेजी है।

विध सारी कागदमें, हम लिए विचार।
तुम साथे मुनीजी संदेसड़ा, आए समाचार।।७३।।

इस भागवत (कागज) में हमारी खबर है, जिसको हमने विचार कर ग्रहण कर लिया है। हे मुनिजी! तुम्हारे द्वारा हमारे घर का समाचार आया है।

या सुध कागद हम लई, समझे सब सार।
औरन को ए कोहेड़ा, ना खुले द्वार।।७४।।

इस भागवत ग्रन्थ को हमने लेकर सार वस्तु को समझ लिया है जो हमारे घर की है। दूसरों के लिए तो यह धुन्ध ही है। उनको समझ में आएगा ही नहीं।

Nijanand App

और विचारे क्या जानहीं, जाने जाको होए।
हम बिना द्वार बेहद के, खोल ना सके कोए।।७५।।

इस दुनियां के जीव इस रहस्य को कैसे जान सकते हैं? जिसका है वही जानता है। हमारे बिना और कोई बेहद का ज्ञान नहीं जान सकता, क्योंकि हम ही बेहद के हैं, अन्य सब हद के जीव हैं।

लाख बेर देखो फेर, न पावे कड़ी कल।
पाई नहीं त्रिगुनने, कर कर गए बल।।७६।।

इस भागवत ग्रन्थ को लाख बार पढ़ो, फिर भी इसमें जो बेहद के ज्ञान की कड़ी है वह किसी को नहीं मिलेगी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने भी बहुत बल किया, परन्तु नहीं समझ पाए।

एतो कोहेड़ा हद का, बेहदी समाचार।
ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार।।७७।।

यह भागवत संसार के जीवों के लिए धुंध है और हम, बेहद के सुन्दरसाथ के घर का समाचार है। इससे हम भेदों को खोलकर जाहिर में बताएंगे।

सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल।
फेर टालो अंदर का, देखो आंखां खोल।।७८।।

यहां पर शुकदेवजी बेहद के वचन लेकर आए हैं। हे सुन्दरसाथजी! अपने अन्दर के संशय मिटाकर आंखें खोलकर देखो।

अस्कंध दूजा मुनिऐं कह्या, चत्रश्लोकी जित।
ब्रह्मांड की जहां उतपन, अर्थ देखो तित।।७९।।

शुकदेव मुनि ने भागवत के दूसरे स्कन्ध में चार विशेष श्लोकों का वर्णन किया है। इनमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का वर्णन है। इनके अर्थ को पहचानो और देखो।

ए द्वार देखोगे जाहेर, होसी माया पेहेचान।
ए माएना नीके लीजियो, हिरदेमें आन।।८०।।

इन चार श्लोकों से तुम्हें माया की पहचान होगी तथा बेहद का पता चलेगा। हे साथजी! हृदय में इसके भेद को समझ कर धारण करना।

मोह तत्व कह्या नींद को, सुरत अहंकार।
सुपन को कह्या ब्रह्मांड, नाम धरे बेसुमार।।८१।।

मोह-तत्व को नींद कहा है और सुरता को अहंकार कहा है। ब्रह्माण्ड को सपना कहा है। इनके और बेशुमार नाम रखे हैं।

पैंडा बेहद वतन का, ए वतनी जाने।
हद का जीव बेहद का, द्वार क्यों पेहेचाने।।८२।।

बेहद का रास्ता हमारे घर के सुन्दरसाथ ही जानेंगे। क्षर ब्रह्माण्ड के जीव बेहद की बातों को नहीं जानेंगे।

देख्यो द्वार बेहद के, सुकजी बलवंत।
पर कल किल्ली क्यों पावहीं, जोर किया अनंत।।८३।।

देखो, सुन्दरसाथजी! शुकदेवजी जैसे महान मुनि ने बहुत ताकत लगाने पर भी बेहद के द्वार खोलने के लिए चाबी (तारतम) और खोलने की कला (जागृत बुद्धि) को नहीं पाया।

Nijanand App

द्वार खोलने दौड़िया, सुकजी सपराना।
ले चल्या संग परीछित, सो तो बोझे दबाना।। ८४ ।।

बेहद का दरवाजा शुकदेवजी खोलने दौड़े। संग में संसार का जीव राजा परीक्षित होने से खुद भी पार का वर्णन न कर सके। राजा आड़े आ गया।

बल किया बलिऐं घना, द्वार द्वार पछटाना।
पर साथे संघाती हद का, इत सो उरझाना।। ८५ ।।

शुकदेवजी ने बल तो बहुत लगाया, परन्तु बेहद के दरवाजे खोलकर प्रवेश नहीं कर सके और पछताते रहे। उनका संगी परीक्षित माया का जीव था, इसलिए वह भी उलझ गए।

रास लीला सुख अखंड, इत तो न केहेलाना।
पाछल तान हुई घनी, अध बीच लेवाना।। ८६ ।।

रास लीला के अखण्ड सुख का वर्णन नहीं कर सके। राजा परीक्षित ने जोर से पीछे खींचा, इसलिए बीच में ही अटक गए।

पात्र बिना रस क्यों रहे, आवत ढलकाना।
पात्र हुते तिन पाइया, भली भांत पेहेचाना।। ८७ ।।

पात्र के बिना इस बेहद का रस टिक नहीं सकता, इसीलिए आते-आते लुढ़क गया। जो पात्र हैं उन ब्रह्मसृष्टियों (सुन्दरसाथ) ने अपने घर की पहचान ले ली।

बरस असी लगे ए रस, सारी पेरे सचवाना।
लिंया पिया साथ में, जिन जैसा जाना।। ८८ ।।

अस्सी वर्ष तक (१६३८ से १७१८ जूनागढ़) यह रस सुन्दरसाथ के बीच में ही बंटता रहा। सुन्दरसाथ ने जितना जाना उतना ही अपने धनी के साथ आनन्द किया।

एक बूंद बाहेर न निकसया, साथ मिने समाना।
जिन का था तिन बिलसिया, मिनो मिने बटाना।। ८९ ।।

इन अस्सी वर्षों में एक बूंद भी जीवों को नहीं मिला। यह सुन्दरसाथ में ही रहा। यह रस सुन्दरसाथ का था। उन्होंने आपस में प्रेम से बांटा।

अब हम मिने थें ए रस, इत आए छलकाना।
छोल आई ज्यों सागर, अंग थें उभराना।। ९० ।।

अब हमारे बीच में से यह रस (वाणी) यहां आकर (जूनागढ़ में) छलक गया। जैसे सागर में पूर (प्रवाह) आता है, उसी तरह श्री राजजी के आवेश से मेरे तन से बाहर निकल गया। सबसे पहले जीवों में यह हरजी व्यास को मिला।

जोर किया हम बोहोतेरा, रस रह्या न ढ़पाना।
ए अब जाहेर होएसी, बाहेर प्रगटाना।। ९१ ।।

हमने बहुत कोशिश की, लेकिन यह रस (तारतम वाणी) हमारे रोके से नहीं रुका। अब यह रस (वाणी) बाहर जाहिर हो गया तथा और आगे भी जाहिर होगा।

Nijanand App

ए रस आज के दिन लों, कित काहू न लखाना।
आवसी साथ इन विध, ए रस लपटाना।।९२।।

इस वाणी को आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना। अब सुन्दरसाथ वाणी के इन वचनों को पहचान कर आएंगे।

जान होए सो जानियो, ए क्योंकर रहे छाना।
क्यों कर ए छिपा रहे, सब सुनसी जहाना।।९३।।

इस वाणी को जिसे समझना हो, समझ ले। यह अब छिपी नहीं रहेगी। सारा संसार इसको सुनेगा।

ए बानी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख।
बोहोत विधें हम रस पिए, बेहद के सुख।।९४।।

यह बेहद की वाणी श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुई है। हर सुन्दरसाथ ने बेहद के सुखों का कई प्रकार से आनन्द लिया।

या बानी के कारने, कई करे तपसन।
या बानी के कारने, कई पीवें अगिन।।९५।।

इस वाणी के लिए कई ने तपस्या की। कई ने अग्निपान किया।

या बानी के कारने, कई दमे देह।
या बानी के कारने, कई करें कष्ट सनेह।।९६।।

इस वाणी के लिए कई ने देह का दमन किया। कई ने प्रेम से कष्ट सहे।

या बानी के कारने, कई गले हेम।
या बानी के कारने, कई लेवे अंनसन नेम।।९७।।

इस वाणी के लिए कई बर्फ में गले और कई ने अन्न तक भी नहीं खाया।

या बानी के कारने, कई भैरव झंपावे।
या बानी के कारने, तिल तिल देह कटावे।।९८।।

इस वाणी के वास्ते कई पहाड़ों से गिरे तथा कई ने काशी में करवट लेकर अपनी देह को तिल-तिल कटाया।

या बानी के कारने, कई संधान सारे।
या बानी के कारने, कई देह जारे।।९९।।

इस वाणी के वास्ते कई ने अपनी हड्डियों के जोड़ खुलवा डाले। कई ने अपने तन को आग में जलाया।

या बानी के कारने, करें कई बिध ताब।
सो मुख थें केते कहूं, हुए जो बिना हिसाब।।१००।।

इस वाणी के वास्ते कई ने तरह-तरह के कष्ट सहे। इस मुख से कहां तक कहूं? कई ने तो बिना हिसाब के अपने तन को भस्म किया है।

किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन।
ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन।।१०१।।

किसी को एक बूंद भी बेहद के रस (तारतम वाणी) एक बूंद भी नहीं मिली। त्रिगुण ब्रह्माण्ड के मालिक कहलाते हैं, उन्होंने खूब खोजा पर मिला नहीं।

Nijanand App

और भी नाम अनेक हैं, पर लेऊं कहा के।
ब्रह्मांड के धनियों ऊपर, लिए जाए न ताके।। १०२ ।।

ब्रह्माण्ड के मालिकों के और भी नाम बहुत हैं, पर ऊपर कैसे कहें।

सो रस सागर इत हुआ, लेहेरें उछले।
साथ सबे हम बिलसहीं, बाहेर पूर भी चले।। १०३ ।।

इस रस के सागर की लहरें उछलीं और हम सब सुन्दरसाथ ने उनका आनन्द लिया और बाहर भी बांटा।

पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहां नौतन।
सब पुरियों में उत्तम, हुई धंन धंन।। १०४ ।।

सबसे पहले नौतनपुरी में जागृत बुद्धि का ज्ञान आया। इससे वह सब पुरियों में उत्तम और धन्य धन्य हुई। (यहां सब पुरियों का अर्थ है द्वारिकापुरी, अयोध्यापुरी, जगन्नाथपुरी, अवन्तिकापुरी, बद्रीनाथपुरी, इत्यादि।

फेर कहूं विध सकल, जासों सब समझाए।
संसा कोई साथ को, मैं राख्यो न जाए।। १०५ ।।

अब फिर से सारी हकीकत को समझाकर कहते हैं, जिससे किसी प्रकार का संशय सुन्दरसाथ में न रह जाए।

जो रस गोकुल प्रगट्या, सो तो सुख अलेखे।
विन जाने सुख बिलसिया, घर कोई न देखे।। १०६ ।।

जो आनन्द गोकुल की लीला में मिला वह अपार है, किन्तु इस सुख को अनजानपन में लिया। घर की सुध नहीं थी।

ए सुख सुपने बिलसिया, साथ पिउ संघाते।
घर देखे भागे सुपना, न देखाय ताथे।। १०७ ।।

यह सपने के सुख सुन्दरसाथ ने अपने धनी के साथ लिए। घर की पहचान न होने के कारण से ही यह सपने की लीला देख सके। जागने पर सपना टूट जाता है।

सुपन भागे सुख क्यों होए, खेल क्यों देखाए।
जब सुख वतन लीजिए, नींद उड़के जाए।। १०८ ।।

सपना मिट जाने से यह सुख कैसे देखते? खेल कैसे देखते? (ब्रज और रास के)। जब अखण्ड घर का सुख आ जाएगा तो संसार का मोह टूट जाएगा।

नींद उड़े भागे सुपना, तब फेर फेरा होए।
सुख सुपन और वतन, लिए जांए न दोए।। १०९ ।।

नींद उड़ जाने से स्वप्न टूट जाता है। हमारी चाहना बाकी रह जाती है और फिर से आना पड़ता है। सपने के सुख और घर के सुख अर्थात् माया के सुख और परमधाम के सुख एक साथ नहीं लिए जा सकते।

या बिध साथ समझियो, सुख साथ को दियो।
यों बिन जाने बृजमें, सुख सुपने लियो।। ११० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस तरह समझना कि हमने बिना जाने ब्रज के सुख सपने में लिए।

Nijanand App

अब सुख रास कहा कहूं, जाने निज सुख होए।
ए सुख साथ पिउ बिना, न जाने कोए।। १११ ।।

अब रास के सुख को कैसे कहूं? यह तो अपने सुख हैं। इनको हम सुन्दरसाथ तथा अपने पिया के बिना दूसरा कोई नहीं जानता।

ए पिउ सरूप नौतन, नौतन सिनगार।
नेह हमारा नौतन, नौतन आकार।। ११२ ।।

रास में हमारे प्रीतम ने नया तन धारण किया। शृंगार नया, हमारा प्रेम नया और हमारा तन भी नया था।

ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए।
जल जमुना नौतन, लेहेरां लेवें बनराए।। ११३ ।।

यह वृन्दावन अत्यन्त सुन्दर तथा नया था। नयी वायु थी, यमुनाजी का जल नया था और हवा की लहरों में वन झूमते थे।

सुगंध बेलियां नौतन, जिमी रेत सेत प्रकास।
नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास।। ११४ ।।

सुगन्ध देने वाली बेलें नयी थीं। जमीन और रेत चमकती थी। निष्कलंक चन्द्रमा नया था जो अपनी पूर्ण कलाओं से चांदनी फैला रहा था।

नौतन रंग पसु पंखी, बानी नई रसाल।
नौतन वेन बजावहीं, नए सुख देवें लाल।। ११५ ।।

नए-नए रंग के पशु पक्षी, नए-नए स्वरों में रस भरी वाणी बोलते। श्री कृष्णजी ने बंसी भी नए-नए स्वरों में बजाकर सुख दिए।

या रस सुख केते कहूं, कई रेहेस प्रकार।
साथ पिउ संग विलास, हम किए अपार।। ११६ ।।

इस आनन्द का वर्णन कहां तक करूं? कई भेद हैं। हम सुन्दरसाथ ने अपने धनी के साथ बेशुमार आनन्द की लीला की।

कई बातें या सुख की, जीव हिरदे जाने।
ए सुख पेहेले थें अलेखे, अति अधिकाने।। ११७ ।।

इस सुख की कई बातें हमारे जीव के हृदय में हैं, वही जानता है। यह सुख पहले से (ब्रज से) बेशुमार है।

तेज सबों में मूल का, सबहीं चेतन।
थिर चर चेतन ए लीला, ऐसी उतपन।। ११८ ।।

वृन्दावन की सम्पूर्ण सामग्री में शुरू से ही चेतना है। इस प्रकार से यहां चर और अचर सभी चेतन हैं। यहां रास की लीला की।

पर ए सुख सबे सुपन में, नेठ नींद जो मांहें।
ए सुख जोग माया मिने, दृष्ट ना घर तांहें।। ११९ ।।

(भले यह ब्रह्माण्ड चेतन तत्व का है) पर हमने इसको फरामोशी के सपने में देखा है। इस योगमाया के सुखों में भी हमें घर की पहचान नहीं थी।

Nijanand App

एक सुख कहे गोकुल के, और सुख रास सुपन।
सुख दोऊ क्यों होवहीं, विचारियो मन।। १२० ।।

एक सुख गोकुल (ब्रज) के और सुख रास के सपने में देखे। हे सुन्दरसाथ! मन में विचार करके देखना। यह दोनों सुख कैसे हो सकते हैं?

जब लीजे सुख सुपन, नहीं वतन दृष्ट।
जब सुख वतन देखिए, नहीं सुपन की सृष्ट।। १२१ ।।

जब सपने के सुख लेते हैं तब नजर घर (परमधाम) की तरफ नहीं होती। इसी प्रकार जब घर के सुख लेते हैं तो सपने की सृष्टि नहीं रहती।

यों सुख सुपने लिए, कछुए नहीं खबर।
इन दोऊ लीला मिने, सुध नाहीं घर।। १२२ ।।

इस तरह से ब्रज और रास में हमने सपने के सुख लिए। तब घर की सुध नहीं थी।

या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन।
ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन।। १२३ ।।

इस तरह से दोनों लीलाएं (ब्रज और रास) देखने के बाद हम घर (परमधाम) पहुंचे। यह ब्रह्माण्ड तीसरा है, जो हमारे लिए बना है।

जो मनोरथ मूल का, हुआ नहीं पूरन।
विन सुध विरह विलास किए, यों रही धाख मन।। १२४ ।।

जो इच्छाएं इश्क रब्द के समय की थीं, उनमें से कुछ बाकी रह गईं। विरह और विलास दोनों हमने अनजाने में लिए, इसलिए चाहना बाकी रह गई।

धाख क्यों रहे अपनी, ए किया इंड फेर।
साथें आए पिउजी, इत दूजी बेर।। १२५ ।।

अपनी चाहना बाकी न रहे, इसलिए यह ब्रह्माण्ड फिर से बनाया और यहां पर दूसरी बार धनी आए।

लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए।
बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए।। १२६ ।।

पहले फेरे में दो लीलाएं (ब्रज और रास)। दूसरे फेरे में भी दो लीलाएं कीं। एक नौतनपुरी में और दूसरी श्री पद्मावतीपुरी में। बिना तारतम वाणी के यह भेद कोई नहीं जान सकता।

एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास।
सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास।। १२७ ।।

एक तन में तारतम ज्ञान आया (देवचन्द्रजी के तन में)। दूसरे तन में ज्ञान को प्रकाशित करने की शक्ति आई (मेहराज ठाकुर का तन)। इस तरह से अब यह जागनी की लीला सब तरह से जाहिर हो जाएगी।

तारतम जोत उद्दोत है, तिनथे कहा होए।
एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए।। १२८ ।।

तारतम की ज्योति से क्या होता है? तारतम वाणी के द्वारा यहां का जीव स्वप्न की लीला और घर—दोनों देखता है।

Nijanand App

वतन देखत जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी।
ए सब याद आवहीं, इत दोए दूसरी।। १२९ ।।

तारतम वाणी के द्वारा साक्षात् घर दिखाई देता है। पहले जो दो लीलाएं (ब्रज और रास) की हैं उनकी सुध आती है। दो लीलाएं जागनी के ब्रह्माण्ड में की हैं। यह सभी याद आती हैं।

याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे।
तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे।। १३० ।।

तारतम वाणी के द्वारा इन सब लीलाओं की याद आती है और जीव आंखों से देखता भी है। इस तरह तारतम वाणी तरह-तरह से अपार सुख देती है।

या लीला की बातें इत, जुबां कही न जाए।
सुख दोऊ इत लीजिए, मनोरथ पुराए।। १३१ ।।

इस लीला की बातें जबान से कही नहीं जातीं। निज घर के तथा सपने के सुख सब यहां मिलते हैं और हमारी मनोकामना पूर्ण होती है।

या लीला को जो बल, वचन सब केहेसी।
वचन माएने देखके, सब सुख लेसी।। १३२ ।।

इस लीला की ताकत का तारतम वाणी से पता चलेगा। उस वाणी को समझकर सब सुख मिलेंगे।

धंन धंन ब्रह्मांड ए हुआ, धंन धंन भरथखंड।
धंन धंन जुग सो कलजुग, जहां लीला प्रचंड।। १३३ ।।

यह ब्रह्माण्ड, यह भरतखण्ड और यह कलियुग धन्य-धन्य हैं, जहां यह लीला जोर-शोर से हुई।

धंन धंन पुरी नौतन, जहां लीला उदे हुई।
केताक साथ आइया, दूजिऐं सब कोई।। १३४ ।।

नौतनपुरी धन्य-धन्य है, जहां यह लीला उदय हुई। इससे कुछ सुन्दरसाथ को नौतनपुरी में ज्ञान मिला और फिर तीनों सृष्टियों को उनके दूसरे तन श्री प्राणनाथजी के स्वरूप से सुख मिला।

धंन धंन धनी साथसों, धंन धंन तारतम।
पूरन प्रकास ल्याए के, सुख दिए हम।। १३५ ।।

धन्य-धन्य हैं धाम के धनी, धन्य-धन्य है तारतम जिसके प्रकाश को लाकर हम सुन्दरसाथ को सब सुख दिए।

तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया।
बोहोत विधें सुख साथ को, खेल देखते दिया।। १३६ ।।

इस तारतम वाणी से बेहद के सभी सुख जाहिर हो गए। सुन्दरसाथ को खेल में तरह-तरह के सुख दिए।

तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको।
जेहेर चढ़्या होए जिमीका, सुख होवे ताको।। १३७ ।।

तारतम वाणी से जिसे जागृत किया जाए उसको सब प्रकार के सुख मिलते हैं और माया का नशा टूट जाता है।

Nijanand App

जो जीव नींद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी।
ल्याए पिउ वतन थें, बल माया जानी।। १३८ ।।

यदि जीव माया को न छोड़ रहा हो तो उसे तारतम वाणी से समझाइए। माया का बल जान करके ही धनी यह वाणी घर से लाए हैं।

जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम।
बेहद का रस श्रवनें, पिलावें हम।। १३९ ।।

सुन्दरसाथ का माया का नशा (अज्ञानता) हटाने के लिए धनी तारतम लाए हैं। उससे पार का ज्ञान हमें पिला रहे हैं।

ए रस श्रवनों जाके झरे, ताए कहा करे जेहेर।
सुपन ना होवे जागते, देखी तां वैर।। १४० ।।

इस तारतम वाणी का रस जिसके कानों में पड़ जाता है उसकी माया की अज्ञानता हट जाती है और जागृत होने पर माया निकट नहीं आती, क्योंकि जहां जागृत अवस्था है वहां नींद (माया) नहीं और जहां माया है वहां जागृत अवस्था नहीं। इन दोनों का वैर है, यह इकट्ठे नहीं रह सकते।

सुपन होवे नींद थें, कई इंड अलेखे।
जिन खिन आंखां खोलिए, तब कछुए ना देखे।। १४१ ।।

नींद के सपने में कई ब्रह्माण्ड दिखाई देते हैं और जब आंखें खोलकर देखें तो कुछ नहीं रहता।

एही रस तारतम का, चढ्या जेहेर उतारे।
निरविख काया करे, जीव जागे करारे।। १४२ ।।

इसी प्रकार से तारतम वाणी का रस माया के नशे को उतार देता है और तन को निर्मल बना देता है और जीव जागकर दृढ़ हो जाता है।

जागे सुख अनेक हैं, इतही अलेखे,
वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे।। १४३ ।।

जागने के बाद यहीं बेशुमार (अनन्त) सुख हैं। यहां बैठे-बैठे घर का भी सुख मिलता है। जीव देखता भी है।

सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे।
वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे।। १४४ ।।

तारतम वाणी के बड़े सुख हैं। उन्हें क्यों जाहिर करें? स्वयं वाणी पढ़ के देखो और अपने जीव को जगाओ।

ए वचन साथ के कारने, मैं तो बाहेर पाड़े।
दरवाजे बेहद के, अनेक उघाड़े।। १४५ ।।

सुन्दरसाथ के लिए ही मैंने इस वाणी को बाहर जाहिर किया है और बेहद के बन्द दरवाजों को खोल दिया है।

आधे अखर का पाओ लुगा, कबूं न बाहेर।
श्री धाम थें ल्याए धनी, तो हुए जाहेर।। १४६ ।।

इससे पहले इस वाणी के आधे अक्षर का भी किसी को ज्ञान नहीं था। अब इस वाणी को धाम के धनी लाए और सब में जाहिर हुई।

Nijanand App

या खेल साथ देखहीं, जुदे जुदे होए।
तो सुख ऐसा पसरत्या, नाहीं सुख बिना कोए।। १४७ ।।

यहां सुन्दरसाथ अलग-अलग होकर खेल देख रहे हैं। तारतम वाणी ने ऐसा सुख फैलाया कि बिना सुख कोई नहीं रहा।

ऐसा खेल छलका, छोड़ाए नहीं।
ब्रह्मांड की कारीगरी, सारी करी सही।। १४८ ।।

यह माया का ऐसा छल का खेल है जो सुन्दरसाथ से छोड़ा नहीं जाता। वह इसे सत (अखण्ड) समझ बैठे हैं। इस ब्रह्माण्ड को ऐसे हुनर (कला) से बनाया गया है जिससे सत्य झूठ और झूठ सत्य दिखाई देता है।

कबूतर बाजीगर के, जैसे कंडिया भरिया।
तबही देखे फूंक देएके, तुरत खाली करिया।। १४९ ।।

जैसे एक बाजीगर अपने जादू की कला से फूंक मारकर खाली पिटारी को कबूतरों से भर देता है और उसी पल फूंक मारकर खाली कर देता है।

ऐसी बाजी इन छलकी, ब्रह्मांड जो रचियो।
देख बाजी कबूतर, साथ मांहें मचियो।। १५० ।।

इसी तरह से यह माया के खेल का ब्रह्माण्ड बना है। ऐसे बाजीगर और कबूतरों के खेल देखकर सुन्दरसाथ इसी में रच पच गया।

आंबो बोए जल सींचियो, तबही फूले फलियो।
बिध बिध की रंग बेलियां, बन उपर चढ़ियो।। १५१ ।।

बाजीगर ने आम के बीज को बोया, जल सींचा और फूंक लगाई और तुरन्त उस पर फूल-फल आ गए तथा इस तरह से तरह-तरह की लताएं पेड़ पर चढ़ जाती हैं।

एह देख चित भरमिया, सुध नहीं सरीर।
विकल भई रंग बेलियां, चित नाहीं धीर।। १५२ ।।

देखने वालों का चित्त भ्रम में पड़ जाता है और उन्हें शरीर तक की सुध नहीं रहती। यह देखकर कि रंग भरी बेलें कहां से आईं, मन स्थिर नहीं रहता।

ततखिन कछू न देखिए, बाजीगर हाथ।
आंबो न कछू बेलियां, या रंग बांध्यो साथ।। १५३ ।।

उसी समय देखते हैं कि बाजीगर के हाथ खाली हैं। न आम हैं, न बेलें हैं। इसी तरह के खेल में सुन्दरसाथ भूला है।

बिसरी सुध सरीर की, बिसर गए घर।
चींटी कुंजर निगलिया, अचरज या पर।। १५४ ।।

सुन्दरसाथ इस माया को देखकर अपने मूल तनों और परमधाम को भूल गए। इस तरह से चींटी के समान माया ने हाथी के समान सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) को निगल लिया। यही बड़ी हैरानी की बात है।

Nijanand App

अचरज एक बड़ो सखी, देखो दिल मांहें।
वस्त खरी को ले गई, जो कछुए नांहें।। १५५ ।।

हे सुन्दरसाथजी! एक और आश्चर्य की बात है दिल में विचार करके देखो कि माया, जो कुछ भी नहीं है, सत वस्तु, जो सुन्दरसाथ है, उनको ले गई (खा गई)।

जोर हुई नींद साथ को, यों सुपन बाढ़्या।
खेल मिने थें बल कर, न जाए काढ़्या।। १५६ ।।

सुन्दरसाथ को माया का ऐसा गहरा नशा हो गया कि उनको माया में से जोर लगाकर निकालना मुश्किल हो गया।

ता कारन बानी बेहद, केहे नींद टालों।
ना देऊं सुपन पसरने, चढ़्या जेहेर उतारों।। १५७ ।।

इस कारण बेहद वाणी कहकर सुन्दरसाथ की माया हटा देती हूं। स्वप्न को फैलने नहीं देंगे और माया के जहर को उतार देंगे।

कुंजर काढ़ों चींटी मुख, सुध आनो सरीर।
तारतम केहे जुदे जुदे, करों खीर और नीर।। १५८ ।।

इसलिए अब हाथी की तरह सुन्दरसाथ को चींटी की तरह माया के मुख में से इनको असल की याद दिलाकर निकाल लेती हूं तथा तारतम वाणी कहकर ब्रह्म और माया को अलग-अलग कर देती हूं।

झूठे को झूठा करूं, सांचा सागर तारूं।
ए रस श्रवनों पिलाएके, साथ के कारज सारूं।। १५९ ।।

झूठी माया को झूठा करके सच्चे सुन्दरसाथ को भवसागर से पार कर दूंगी तथा वाणी का रस पिलाकर सुन्दरसाथ के सब कार्य सिद्ध कर दूंगा।

मोह जेहेर ऐसा जानके, ल्याए तारतम।
सब विध का ए औखद, प्रकासे खसम।। १६० ।।

मोह सागर के ऐसे जहर को समझकर ही धनी तारतम वाणी लाए हैं जो सब दुःखों की दवा है। इसे धनी जाहिर कर रहे हैं।

सब किया उजाला खेल में, साथ देखन आया।
और जीव बंधाने या बिध, बिध बिध की माया।। १६१ ।।

सुन्दरसाथ जो खेल देखने आया है, उसे बेहद पार तक का पूरा ज्ञान खेल में दे दिया और संसार के जीव तो माया में अभी भी बंधे पड़े हैं।

दूजे तीजे मैं तो कहे, जो साथ को माया भारी।
तुम देखो सुपना सत कर, तो मैं कह्या विचारी।। १६२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम माया को सत (सत्य) मान बैठे हो, इसलिए मैंने दूसरा (ईश्वरी सृष्टि) और तीसरा (जीव सृष्टि) विचारकर ऐसा कहा है।

विचार के छल छोड़िए, तो होवे दोऊ पर।
सुपने भी सुख लीजिए, हरखें जागीए घर।। १६३ ।।

ऐसा विचार कर माया को छोड़ दो तो तुमको दोनों तरह का सुख मिलेगा। सपने में भी सुख मिलेगा और घर में भी हंसते हुए उठोगे।

Nijanand App

तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन।
जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन।। १६४ ।।

तारतम से विचार कर देखा जाए तो सुन्दरसाथ के बिना दूसरा कोई है ही नहीं, अर्थात् सब सपना है। यदि जगाए बिना तुम्हें घर ले चलें तो तुम्हारी इच्छा ज्यों की त्यों बनी रहेगी। मैं यह नहीं चाहती।

हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर।
अछर पार वतन है, जागिए इन घर।। १६५ ।।

हद (माया का संसार-क्षर ब्रह्माण्ड), बेहद (योगमाया का ब्रह्माण्ड) अक्षर (बेहद के पार श्री राजजी का सत अंग-अक्षर धाम) तथा अक्षर के पार अपना घर परमधाम है, जहां जागना है।

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं।। १६६ ।।

माया की तथा घर (परमधाम) की दोनों की हकीकत तुमको अलग-अलग समझा दी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस तरह से सुन्दरसाथ को हंसते-खेलते जगाऊंगी और इस माया के ब्रह्माण्ड को उड़ाऊंगी।

|| प्रकरण || ३१ || चौपाई || ९५४ ||

दूध पानी का निबेरा
राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो।
तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव।। १ ।।

हे परमधाम के प्यारे सुन्दरसाथ! तुम कमर बांधकर खड़े हो जाओ और अपनी सुरता (ध्यान) को धनी के चरणों में लगा दो। कर्म, उपासना और ज्ञान तीनों काण्डों में शुकदेवजी का ज्ञान बड़ा है। उनकी वाणी की हकीकत मैं बताती हूं।

बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार।
जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे।। २ ।।

हे परमधाम के साथियो! मैं तुमको तुम्हारे पूछे बिना ही बता रही हूं, ताकि तुम्हारे अन्दर यदि संशय रह गया, तो मेरी आत्मा सहन नहीं करेगी।

एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए।
तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया।। ३ ।।

यहां ऐसा कहा जाता है कि चींटी के पैर से हाथी बंध गया तथा तिनके ने पर्वत को ढक लिया, किन्तु उसे किसी ने देखा नहीं।

चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूं ना परी कल।
सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे।। ४ ।।

चींटी हाथी को खा गई इसकी भी जानकारी किसी को नहीं हुई। सनकादिक ऋषियों ने ब्रह्माजी से पूछा कि क्या जीव और मन इकट्ठे रहते हैं?

Nijanand App